पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर हिन्दी

(W.E.F. सत्र : 2025-26)

हिन्दी विभाग

कला अध्ययनशाला

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	पाठ्यक्रम	पृष्ठ संख्या
	अध्ययन मंडल के बैठक का कार्यवृत्त	2
1.	Programme Outcomes	3
2.	Programme Specific Outcomes	3-4
3.	पाठ्यक्रम संरचना - MA 1 SEM	5
4.	पाठ्यक्रम संरचना - MA II SEM	6
5.	पाठ्यक्रम संरचना - MA III SEM	7
6.	पाठ्यक्रम संरचना - MA IV SEM	8
7.	स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम - MA 1 SEM	10-19
8.	स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम - MA II SEM	21-31
9.	स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम - MA III SEM	33-45
10.	स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम - MA IV SEM	47-56
11.	स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम – MA ABC पाठ्यक्रम	57-58

हिंदी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 No 25 of 2009 के अंतर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

प्रो. गौरी त्रिपाठी
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

क्रमांक/ /हिंदी/2025
बिलासपुर, दिनांक :

अध्ययन मण्डल (BOS) की बैठक का कार्यवृत्त

- दिनांक 07 जुलाई 2025 को हिंदी विभाग में गूगल मीट पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से बैठक आयोजित की गई।
- बैठक में अध्ययन मंडल समिति के समस्त सदस्यगण ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।
- बैठक में प्रस्तावित चार वर्षीय स्नातक हिंदी पाठ्यक्रम (नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार) पर चर्चा की गई जिसके अंतर्गत प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन तथा पंचम, छठे, सातवें और आठवें सेमेस्टर के पाठ्यक्रम निर्माण को अध्ययन मण्डल द्वारा अनुमोदित किया गया। साथ ही चार वर्षीय स्नातक हिंदी पाठ्यक्रम (नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार) को 2025-26 व आगे के सत्रों में लागू करने की अनुशंसा की गई।
- बैठक में प्रस्तावित स्नातकोत्तर हिंदी पाठ्यक्रम को सत्र 2024-25 से लागू पाठ्यक्रम में आंशिक परिवर्तन के साथ अध्ययन मण्डल द्वारा अनुमोदित किया गया। साथ ही स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को 2025-26 व आगे के सत्रों में लागू करने की अनुशंसा की गई।
- एम. ए. प्रथम सेमेस्टर में चतुर्थ प्रश्न पत्र (भारतीय काव्यशास्त्र) के समाननांतर MOOCS पोर्टल से 'भारतीय काव्यशास्त्र' नामक प्रश्न-पत्र शामिल करने की अनुशंसा की गई।

बैठक में उपस्थित सदस्यों के हस्ताक्षर

क्र. सं.	अध्ययन मंडल के सदस्यगण	पदनाम	हस्ताक्षर
1.	प्रो. गौरी त्रिपाठी प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग)	अध्यक्ष	
2.	प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह आचार्य, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उ.प्र.) (माननीय कुलपति जी द्वारा नामित वाह्य विषय विशेषज्ञ)	सदस्य	
3.	डॉ. रमेश कुमार गोहे सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)	सदस्य	

प्रो. गौरी त्रिपाठी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

(W.E.F. सत्र 2025-26)

ProgrammeOutcomes :

PO1 : हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य से विद्यार्थी पूरी तरह अवगत हो सकेंगे।

PO2 : विद्यार्थियों की तमाम भौतिक या आत्मिक उपलब्धियों का महत्व इस बात पर आज निर्भर करने लगा है कि बाजार में उसकी उपयोगिता क्या और कितनी है? इस पाठ्यक्रम की सहायता से हमारे विद्यार्थी बाजार के इन मानदंडों पर खरे उतरेंगे।

PO3 : हिन्दी के इस पाठ्यक्रम में हमने बाजार की नई-नई संभावनाओं को वर्तमान सामाजिक संदर्भों से जोड़कर उसे उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

PO4 : एक संस्कारित और सक्षम व्यक्तित्व के निर्माण में इस पाठ्यक्रम का महत्व वर्तमान के साथ-साथ नए भारत का भविष्य गढ़ने में छात्रों को समर्थ और संभावनाशील बनाना है।

PO5 : अनुवाद आज महज साहित्य की एक विधा ही नहीं है, अपितु एक व्यावसायिक संभावना के रूप में यह तेजी से उभर रही है। इस पाठ्यक्रम की खासियत अनुवाद की इस व्यावसायिक संभावना के क्षेत्र में छात्रों को दक्ष बनाना भी है।

Programme Specific Outcomes:

PSO1	मध्ययुगीन भारतीय समाज के भीतर प्रवाहित हो रही लोकजागरण की भित्ति में विकसित आधुनिक भारतीय वैज्ञानिक चेतना की जनतांत्रिक पक्ष का अध्ययन करना। कालांतर में विदेशी पराधीनता की कारा से मुक्त होने के लिए 1857 के स्वतंत्रता संघर्ष की अनुगूँज साहित्य में भी दिखता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में इन दोनों के विकास का अध्ययन है। इतिहास और कथा-काव्य की जुगलबंदी में साहित्यकार का लक्ष्य इतिहास से अधिक मनुष्य की मनुष्यता को बचाने की हरसंभव कोशिश रहा है।इस क्रम में साहित्य में वर्णित ऐतिहासिक घटनाओं को इतिहास मानने की भूल से साहित्य आगाह करती है। भारतीय समाज में निहित सांस्कृतिक विभिन्नताओं के बावजूद उसकी एकता यहाँ की मुख्य विशेषता है। सांस्कृतिक रुपांतरण की प्रक्रिया और उसके विकास की कलात्मक अभिव्यक्ति कहानियों में अभिव्यक्त होती है। कहानियोंकी सहायता से विद्यार्थी स्वाधीनता के पहले औपनिवेशिक भारत के स्वरुप को समझ सकेंगे और उसके बाद के नव-उपनिवेशवाद की प्रक्रिया में आमजन की केंद्रीय स्थिति से भी बखूबी परिचित होंगे।
PSO2	अपने वर्तमान समय की चुनौतियों से रुबरु होते समय विद्यर्थियों में साहित्य की मूलवर्ती चेतना उसे सुस्पष्ट मार्गदर्शन करती है। वह चीजों और संबंधों को सिर्फ भौतिक प्रगति में देखे जाने का विरोध करती है। भौतिक विकास के इस युग में मनुष्य-सानिध्य के बिना स्वयं को हताश, अजनबी और अकेला महसूस करता है। उसने अपने जीवन का उद्देश्य ऐंद्रिय सुखों, भोग-विलास के संसाधनों और संपत्तियाँ अर्जित करने में फोकस कर रखा है। ऐसे में पाठ्यक्रम का आदर्श छात्रों को सार्थक बनाने की कशमकश, गहनतर मानवीय जिज्ञासाओं से युक्त बनाना और लोक-मंगल से संबद्ध मूल्यों की उनमें प्रतिष्ठा करना है। मध्यकालीन समाज के उच्चवर्ग की क्षयिष्णु और कुलीन अभिरुचियों के साथ-साथ जनकाव्य की एक अन्य धारा भी प्रवाहमान थी, जिसमें जीवन की वास्तविकता के साथ अनुभूति की गहराई विद्यमान थी। जनकाव्य की इस धारा में शामिल रोमांटिक कवियों में प्रेम की विविध भावाभिव्यक्तियों में युग धड़कता था। रीतिकाल का अध्ययन इसी आधारशिला पर की जाएगी। इसी क्रम में स्नातकोत्तर हिन्दी के इस पाठ्यक्रम में इतिहास की किताबों में लगभग विस्मृत अपने समय और समाज में कियाशील चरित्रों को हिन्दी की लंबी कविताओं में प्रमुखता दी गयी है।

	हिन्दी की भाषिक संरचना का अध्ययन और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता की पहचान के साथ उसके मानकीकरण की प्रक्रिया इसलिए आवश्यक है क्योंकि यदि कोई विदेशी हिन्दी सीखना चाहे, तो भाषा के मानकीकरण के अभाव में कहीं हमारी हिन्दी उसके लिए जटिल, क्लिष्ट और दुर्बोध न हो जाए।
PSO3	अपभ्रंश के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों से ही हिन्दी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। दसवीं-ग्यारहवीं सदी तक खड़ी बोली हिन्दी भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी। हिन्दी साहित्य के विकास की दिशा और दशा को जानना सही अर्थों में हिन्दी के प्रति आत्यंतिक लगाव, प्रेम और उसकी उन्नति का परिचायक है। 20वीं सदी सामन्तवाद के कंधे पर आरुढ़ होकर भारत में पूँजीवाद के पैर जमाने का समय था। मध्यवर्ग का उदय भी इसी युग की देन है। यह वर्ग एक नए सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए भी तैयार हो रहा था। आधुनिक काव्य में बीसवीं सदी की ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का समग्र अवलोकन है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक तक आते-आते समाज और साहित्य में उत्तर आधुनिक युग का सूत्रपात हो चुका था। साहित्य में वंचित समुदायों की केंद्रीय भूमिका बनने लगी। आधुनिक विमर्श के अंतर्गत सबाल्टर्न डिस्कोर्स का अध्ययन किया जाएगा। सूचनाक्रान्ति तथा संचार प्रौद्योगिकी के दौर में मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान है। मीडिया में हिन्दी की केंद्रीय स्थिति और उसके भविष्य के साथ ही हिन्दी के मानकीकरण से यह पाठ्यक्रम बिल्कुल भी अछूता नहीं है। भारतीय समाज मुक्त बाजार और उपभोक्तावाद की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। बाजार की व्यवस्था में आदमी इंसान नहीं होता, वह उत्पादक या उपभोक्ता होता है या फिर खरीदार या विक्रेता। बाजार की इस प्रवृत्ति के बीच साहित्य के माध्यम से मनुष्य को अधिक मानवीय बनाने के निमित्त नाटक और हिन्दी सिनेमा पाठ्यक्रम में शामिल है।
PSO4	हिन्दी कहानियों में नायक की जगह चरित्र महत्वपूर्ण हो गए। इसका लाभ यह है कि इसमें अपने समय का समाजशास्त्रीय अध्ययन आसानी से किया जा सकता है। साहित्य में खास तौर पर कहानियों में सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज के साक्ष्य आसानी से खंगाले जा सकते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी की लंबी कहानियों का अध्ययन अपने मूल में भारतीय समाज का अध्ययन है। साहित्य के वातायन में भारतीय चिंतनधारा और पाश्चात्य चिंतनधारा में कोई भेद नहीं है। इसमें सभी चिंताधाराएँ बेरोकटोक आती-जाती रहती हैं। इसलिए हिन्दी स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में अलग-अलग चिंतनों को इस उद्देश्य से शामिल किया गया है कि विद्यार्थी इससे अपनाएक नया चिंतन विकसित कर सकने में समर्थ हो सके। साहित्य मनुष्य की मनुष्यता की अभिव्यक्ति का माध्यम है। मौखिक साहित्य में लोक की सृजनशीलता दृष्टिगोचर होती है। साहित्य को विकसित करने में इसके योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। शोधपरक आलेख लिख सकने में दक्ष बनाने और समाजशास्त्रीय चिंतन हेतु प्रेरित करने के निमित्त शोध प्रविधि और उसकी सैद्धांतिकी से परिचित होना आवश्यक है । भविष्य में विद्यार्थी प्रामाणिक और बेहतर शोध कर सकें उसकी पूर्व पीठिका के तौर पर लघु शोध-प्रबंध इस पाठ्यक्रम में शामिल है ।

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

S.N.	Course	Course Code	Course Name	Periods			Scheme			Credits
				L	T	P	IA	ESE	Sub Total	
1.	Core 1	HIPATT1	**हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल)**	4	1	-	30	70	100	**5**
2.	Core 2	HIPATT2	**आदिकालीन काव्य**	4	1	-	30	70	100	**5**
3.	Core 3	HIPATT3	**मध्यकालीन काव्य (भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य)**	4	1	-	30	70	100	**5**
4.	Core 4	HIPATT4	**भारतीय काव्यशास्त्र**	4	1	-	30	70	100	**5**
5.	**MOOC Course**	HIPATT4M	**भारतीय काव्यशास्त्र**	4	1	-	30	70	100	**3**
6.	Open Elective	HIPATO1	**हिन्दी भाषा**	2	-	-	30	70	100	**2**
			Grand Total	**18**	**4**	**-**	**150**	**350**	**500**	**22**

Total Credits : 22 Total Contact Hours : 285 Total Marks : 500

L : Lecture, T : Tutorial, P : Practical, IA : Internal Assessment, ESE : End Semester Exam

Internal Assessment : Two Class Test of 15 Marks each will be conducted.

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

S. N.	Course	Course Code	Course Name	Periods			Scheme			Credits
				L	T	P	IA	ESE	Sub Total	
1.	Core 1	HIPBTT1	**हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)**	4	1	-	30	70	100	**5**
2.	Core 2	HIPBTT2	**कथेतर गद्य विधाएं**	4	1	-	30	70	100	**5**
3.	Core 3	HIPBTT3	**पाश्चात्य काव्यशास्त्र**	4	1	-	30	70	100	**5**
4.	Soft Core Elective (Internal Choice)	HIPBTD1	**भाषा विज्ञान**	4	1	-	30	70	100	**5**
		HIPBTD2	**जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता**							
			Grand Total	**16**	**4**	**-**	**120**	**280**	**400**	**20**

Total Credits :20 Total Contact Hours : 260 Total Marks : 400

L : Lecture, T : Tutorial, P : Practical, IA : Internal Assessment, ESE : End Semester Exam

Internal Assessment: Two Class Test of 15 Marks each will be conducted.

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

S. N.	Course	Course Code	Course Name	Periods			Scheme			Credits
				L	T	P	IA	ESE	Sub Total	
1.	Core 1	HIPCTT1	**कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)**	4	1	-	30	70	100	**5**
2.	Core 2	HIPCTT2	**आधुनिक काव्य**	4	1	-	30	70	100	**5**
3.	Soft Core Elective (Internal Choice)	HIPCTD1	**आधुनिक विमर्श**	4	1	-	30	70	100	**5**
		HIPCTD7	**भारतीय साहित्य**							
4.	Soft Core Elective (Internal Choice)	HIPCTD5	**समकालीन कविता**	4	1	-	30	70	100	**5**
		HIPCTD8	**साहित्य का समाजशास्त्र**							
			Grand Total	**16**	**4**	**-**	**120**	**280**	**400**	**20**

Total Credits :20 Total Contact Hours : 260 Total Marks : 400

L : Lecture, T : Tutorial, P : Practical, IA : Internal Assessment, ESE : End Semester Exam

Internal Assessment : Two Class Test of 15 Marks each will be conducted.

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – IV

S.N.	Course	Course Code	Course Name	Periods			Scheme			Credits
				L	T	P	IA	ESE	Sub Total	
1.	Core 1	HIPDTT1	हिन्दी आलोचना	4	1	-	30	70	100	**5**
2.	Soft Core Elective (Internal Choice)	HIPDTD1	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	1	-	30	70	100	**5**
		HIPDTD2	लोक-साहित्य							
3.	Research Methodology	HIPDTT2	शोध-प्रविधि	2	-	-	30	70	100	**2**
4.	Dissertation/ Project Followed by Seminar 01	HIPDLD1	लघु शोध-प्रबंध	-	-	-	-	100	100	**6**
			Grand Total	**10**	**2**	**-**	**90**	**310**	**400**	**18**

Total Credits :18 Total Contact Hours : 230 Total Marks : 400

L : Lecture, T : Tutorial, P : Practical, IA : Internal Assessment, ESE : End Semester Exam

Internal Assessment : Two Class Test of 15 Marks each will be conducted.

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र– प्रथम (कोर प्रश्न-पत्र)

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल तक)

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPATT1	**हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल तक)**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- सिद्ध, नाथ, जैन एवं प्रमुख रासो काव्य की सहायता से हिन्दी की विकास-प्रक्रिया का अध्ययन करना
- मध्यकालीन समाज का अध्ययन
- कविताओं के माध्यम से लोक-जीवन का चित्रण

Syllabus Content :

इकाई : 1

साहित्येतिहास दर्शन :

- इतिहास क्या है ? साहित्य का इतिहास लेखन : दर्शन, प्रमुख पद्धतियाँ और विचारधारा
- काल-विभाजन, नामकरण की समस्या एवं आधार

इकाई : 2

आदिकाल :

- हिन्दी साहित्य का आरम्भ
- आदिकालीन हिन्दी साहित्य की प्रमुख धाराएँ : सिद्ध एवं नाथ संप्रदाय, विद्यापति, अमीर खुसरो की प्रयोगधर्मिता
- आदिकालीन हिन्दी साहित्य का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं वैचारिक प्रदेय और रचनात्मक प्रवृत्तियाँ
- रासो काव्य परंपरा : प्रमुख ग्रंथ ।
- पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, ऐतिहासिकता एवं वाचिक/श्रुति परंपरा

इकाई : 3

भक्तिकाल :

- भक्ति आंदोलन के उदय का अखिल भारतीय स्वरूप : सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि
- भक्तिकाल - लोक जागरण की अवधारणा एवं सांस्कृतिक समन्वय, इस्लाम का प्रभाव
- निर्गुण भक्ति - संत काव्य परम्परा साहित्यिक, सांस्कृतिक अवदान
- संत काव्य में रहस्यवाद, प्रेम-तत्व, समाज-दर्शन
- सूफी काव्य परम्परा : साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवदान, प्रेम-तत्व, कथानक रुढ़ि एवं लोक-तत्व
- प्रमुख कवि और उनकी रचनाओं का सामान्य परिचय

इकाई : 4

- सगुण भक्ति-काव्य (कृष्णभक्ति काव्य तथा रामभक्ति काव्य)
- लोकमंगल, लोकरंजन, अष्टछाप, श्रृंगार एवं भक्ति, कृषक संस्कृति
- अष्टछाप और उसके प्रमुख कवि

- सम्प्रदाय-मुक्त कृष्ण भक्ति धारा के कवि और उनका काव्य : मीरा, रसखान व अन्य कवि
- कृष्ण-भक्तिकाव्य का सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रदेय
- रामभक्ति धारा : सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रदेय
- तुलसीदास और उनका काव्य : लोकमंगल की अवधारणा

इकाई : 5

रीतिकाल

- उत्तर-भक्तिकाल और रीतिकाल का अन्तर्सम्बन्ध
- रीतिकाल : नामकरण की समस्या
- रीतिकालीन काव्य : विविध धाराएँ एवं प्रवृतियाँ (रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त, रीतिबद्ध साहित्य)
- रीतिकाल की अन्य धाराएं वीर काव्य, नीति काव्य और भक्ति काव्य
- रीतिकालीन कविता के मूल्यांकन का नया परिप्रेक्ष्य

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरुप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. भक्ति आन्दोलन और सूर का काव्य : मैनेजर पाण्डेय : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. कबीर : (सं.) हजारीप्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. त्रिवेणी: आचार्य रामचंद्र शुक्ल : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ. बच्चन सिंह : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. साहित्यिक निबंध : गणपतिचन्द्र गुप्त : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. विद्यापति : डॉ. शिवप्रसाद सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
9. भक्ति आंदोलन और काव्य : गोपेश्वर सिंह
10. हिन्दी का गद्य साहित्य : डॉ. रामचन्द्र तिवारी

Course Learning Outcomes :

- किसी भी तरह के अनुशासन के व्यवस्थित अध्ययन के लिए उसके इतिहास का अध्ययन बेहद आवश्यक है।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास से हमें समाज और साहित्य की संक्रमणकालीन दशा और उसके विकास की दिशा को समझने में मदद मिलेगी।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	2	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र – द्वितीय (कोर प्रश्न-पत्र)

आदिकालीन काव्य

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTT2	**आदिकालीन काव्य**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- अपभ्रंश का सामान्य परिचय
- सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य का अध्ययन
- लोक साहित्य की पहचान
- हिन्दी के विकास-क्रम और उसकी प्रवृत्तियों का सामाजिक अध्ययन

Syllabus Content :

इकाई : 1

आदिकालीन साहित्य का परिचय
हिन्दी का उद्भव और विकास
अपभ्रंश और हिन्दी का साहित्यिक संबंध

इकाई : 2

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

सरहपा : दोहाकोश (1 से 12 दोहे) (अपभ्रंश और अवहट्ट : एक अंतरयात्रा, डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय, चौखम्बा पब्लिशर्श, वाराणसी)

अद्दहमाण : सन्देश रासक (द्वितीय प्रक्रमः) : हजारी प्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

राम सिंह के दोहे : दोहा संख्या 1, 2, 3, 4, 5, 6 7
(अपभ्रंश और अवहट्ट : एक अंतरयात्रा, डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय, चौखम्बा पब्लिशर्श, वाराणसी)

हेमचन्द्र सूरि : दोहा संख्या 1, 2, 3, 4, 5 (अपभ्रंश और अवहट्ट : एक अंतरयात्रा, डॉ. शंभुनाथ पाण्डेय, चौखम्बा पब्लिशर्श, वाराणसी)

इकाई : 3

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

चंदबरदाई : पृथ्वीराज रासो (कयमास वध) : सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, साहित्य भवन, इलाहाबाद।

इकाई : 4

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

विद्यापति : पदावली : रुप वर्णन- 10,11, 12, 13, 16 विरह – 54, 56 : (सं. शिवप्रसाद सिंह)

इकाई : 5

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

अमीर खुसरो : **दोहा -** 1. खुसरो रैन सुहाग की..., 2. खुसरो दरिया प्रेम का..., 3. खीर पकायी जतन से..., 4. गोरी सोवे सेज पर...
गीत – छाप-तिलक सब छीनी रे, जब यार देखा नैन भर, ज़े हाले मिसकीं मकुन तग़ाफ़ुल (हिंदवी वेबसाईट से)

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. सन्देश रासक : हजारी प्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. विद्यापति पदावली : (सं.) शिवप्रसाद सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल : प्रभात प्रकाशन, म.प्र.।
5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द्विवेदी : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य की भूमिका : हजारी प्रसाद द्विवेदी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह : राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
8. पृथ्वीराज रासो : सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
9. अमीर खुसरो : परमानंद पांचाल, भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- हिन्दी भाषा के पूर्ववर्ती रुप अपभ्रंश, जिसके लिखित रुप से ही हिन्दी साहित्य का व्यवस्थित इतिहास शुरु होता है-- का अध्ययन हिन्दी साहित्य के विकास की दिशा और विभिन्न कालावधियों में उसकी प्रवृत्तियों का अध्ययन, उसके सामाजिक संदर्भों को जानने के लिए आवश्यक है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
स्नातकोत्तर हिन्दी
सेमेस्टर – I
प्रश्न पत्र – तृतीय (कोर प्रश्न-पत्र)
मध्यकालीन काव्य (भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य)

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPATT3	**मध्यकालीन काव्य (भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य)**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective:

- हिन्दी साहित्य का मध्यकाल वह आधारभूमि है जिस पर साहित्य का आधुनिक युग और उसके समकालीन सन्दर्भ विकसित हुए हैं।
- बाजार के अत्यधिक दवाब के बावजूद आज के साहित्य को अपनी परम्परा से जोड़े रखने में मध्यकालीन छंद विन्यास और उसकी भाव संवेदना का अध्ययन आवश्यक है।

Syllabus Content:

इकाई एक

भक्तिकाल की विविध धाराएं : संक्षिप्त परिचय एवं महत्वपूर्ण कवि
हिन्दी की संत काव्य परंपरा और कबीर का साहित्य
कबीर - पद संख्या 160 से 180 : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
साखी : परचा को अंग
संदर्भ : (कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली)
जायसी - : पद्मावत (नागमती वियोग खंड) : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
संदर्भ : (पद्मावत - सं. रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली)

इकाई दो

सूरदास - पद संख्या 21 से 70 : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
संदर्भ : (भ्रमरगीत सार - सं. रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन)
मीरा – प्रारंभ से 20 पद : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
संदर्भ : मीरा का काव्य/ मीराँ पदावली - विश्वनाथ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

इकाई तीन

तुलसीदास - उत्तर कांड (रामचरितमानस) : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
संदर्भ : गीता प्रेस, गोरखपुर
केशव - रामचंद्रिका : पंचवटी (वन वर्णन)

इकाई चार

बिहारी - पद संख्या 1 से 50 : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन
संदर्भ : (बिहारी रत्नाकर - सं. जगन्नाथ दास रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
घनानंद - पद संख्या 1 से 30 : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन, संदर्भ : (घनानंद- कवित्त – सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र)

इकाई पांच

रसखान - 1. मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं ...
2. लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी... संदर्भ : (सुजान रसखान - सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)
नज़ीर अकबराबादी : कौड़ी है जिसके पास... (बुद्धिमानों की बातें) (संदर्भ : कविता- समय – डॉ. गौरी त्रिपाठी)

Course Learning Outcomes

- विद्यार्थी मध्यकालीन कवि, कविता, युगबोध के साथ उनके संदर्भों एवं संबंधों की परख विकसित कर सकेंगे।
- अपभ्रंश से लेकर देशज शब्दावली किन रूपों में कविता की समृद्धि को सुनिश्चित करते हुए उसे लोक तक ले जाती है, विद्यार्थी इससे भी अवगत होंगे।
- शिल्प की दृष्टि से कविता किन अर्थों में महत्वपूर्ण है, इसकी समझ विद्यार्थियों में विकसित होगी ।
- विद्यार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता के अध्ययन से उच्चभावबोध एवं उच्च चिंतन की ओर अग्रसर होकर बेहतर मनुष्य बनने का प्रयास करेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी कविता के प्रस्थान को समझते हुए कविता का पाठ कैसे किया जाए बुनियादी कौशल से भी परिचित होंगे।
- इस पाठ्यचर्या के अध्ययन से रोज़गार के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों को सहायतामिलेगी ।

सहायकग्रंथ :

1. त्रिवेणी– रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
2. विद्यापति पदावली– सं. शिवप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन
3. कविता समय– डॉ. गौरी त्रिपाठी, उत्कर्ष प्रकाशन, कानपुर
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. रीतिकाव्य की भूमिका– डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. लोकजागरण और हिन्दी साहित्य – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. भक्ति आंदोलन और सूर का काव्य– मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Course Learning Outcomes:

- हिन्दी भाषा के पूर्ववर्ती रूप अपभ्रंश, जिसके लिखित रूप से ही हिन्दी साहित्य का व्यवस्थित इतिहास शुरु होता है।
- इसका अध्ययन हिन्दी साहित्य के विकास की दिशा और विभिन्न कालावधियों में उसकी प्रवृत्तियों का अध्ययन, उसके सामाजिक संदर्भों को जानने के लिए आवश्यक है।
- भारतीय इतिहास और समाज के सांस्कृतिक पक्ष को जानना आवश्यक है ।
- भक्तिकाव्य भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण भाग है । इसे जानना आवश्यक है ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	2	3	3	2	2	2	3	3	1	2	2
CO 3	3	3	2	3	1	2	2	3	2	2	1	3
CO 4	3	2	2	2	2	1	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र – चतुर्थ (कोर प्रश्न-पत्र)

भारतीय काव्यशास्त्र

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPATT4	**भारतीय काव्यशास्त्र**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- काव्यांग विवेचन की प्रक्रिया से अवगत होना
- अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देना
- प्रेम के उदात्त स्वरुप की पहचान
- अतीत-बोध के माध्यम से वर्तमान की समझ विकसित करना
- भारतीय काव्यशास्त्र के सम्प्रदायों से विद्यार्थियों को अवगत कराना

Syllabus Content :

इकाई 1

भारतीय काव्यशास्त्र के विधायक तत्व : काव्य लक्षण, काव्य गुण, काव्य दोष, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य स्वरुप, काव्यवृत्ति, काव्य प्रतिभा

इकाई 2

रस सिद्धान्त : रस की अवधारणा, रस निष्पत्ति और साधारणीकरण ।

ध्वनि सिद्धान्त : ध्वनि की अवधारणा, ध्वनियों का वर्गीकरण ।

अलंकार सिद्धान्त : अलंकार की अवधारणा, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का वर्गीकरण, अलंकार सिद्धान्त एवं अन्य सम्प्रदाय

इकाई 3

रीति सिद्धान्त : रीति की अवधारणा, रीति एवं गुण, रीति का वर्गीकरण ।

वक्रोक्ति सिद्धान्त : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति का वर्गीकरण, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद ।

औचित्य सिद्धान्त : औचित्य की अवधारणा

इकाई 4

संस्कृत काव्यशास्त्र में भाषा विवेचन :

(क) शब्द शक्तियाँ,

(ख) शब्दार्थ-मीमांसा, अभिहितान्यवाद, अन्विताभिधान्यवाद, स्फोट, ध्वनि, वृत्तियां।

छन्दशास्त्र :

(क) छंद की अवधारणा और परिवर्तन क्रम

(ख) हिन्दी छंद शास्त्र का विकास

(ग) छंद के विविध आधार लय, ताल, तुक।

इकाई 5

हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास : सामान्य परिचय ।

हिन्दी काव्यशास्त्र की रुपरेखा

(क) भक्तिकालीन कवियों के काव्य सिद्धान्त और भक्ति रस

(ख) रीतिकालीन आचार्यों के काव्य सिद्धान्त और मौलिक उद्भावनाएं : आत्म सजगता, पदविन्यास, कलात्मकता (विशेष संदर्भ: केशव, देव, चिन्तामणि, भिखारीदास : काव्य लक्षण और कवि-शिक्षा)

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा– डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. भारतीय काव्यशास्त्र– डॉ. तारकनाथ बाली, वाणीप्रकाशन, नयी दिल्ली
3. काव्यशास्त्र – भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना – डॉ. रामचंद्र तिवारी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
5. भारतीय काव्यशास्त्र – सत्यदेव मिश्र, अशोक प्रकाशन, नयी दिल्ली
6. संस्कृत आलोचना, बलदेव उपाध्याय

Course Learning Outcomes :

- भारतीय काव्यशास्त्र मूलतः हमारी भारतीय संस्कृति का शास्त्र है ।
- संस्कृति में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव काव्यशास्त्रियों के भिन्न चिंतन और उनकी चिंताओं का इतिहास है ।
- साहित्य के भीतर समाज को देखना और उसे परम्परागत दृष्टियों से रेखांकित करने की प्रवृत्ति विकसित होगी ।
- भाषा और साहित्य को पढ़ने तथा उसके सामाजिक उपदेयों की समझ विकसित होगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	2
CO 2	3	2	3	3	2	2	2	3	3	1	2	3
CO 3	3	3	2	3	1	2	3	2	2	2	1	3
CO 4	3	3	2	2	2	1	2	3	2	2	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र– हिन्दी भाषा (Open Elective)

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPATO1	**हिन्दी भाषा**	2	-	-	2 Hours	30	70	100	2

Course Objective :

- हिन्दी भाषा के तमाम पहलुओं से अवगत होना।
- भाषा कौशल क्षमता को प्रोत्साहित करना।
- देवनागरी लिपि और राजभाषा की समझ विकसित करना।
- भाषा के अखिल भारतीय स्वरुप का अध्ययन व जानकारी।
- हिन्दी भाषा का समाज और साहित्य के अंतरसंबंध का अध्ययन करना।

Syllabus Content:

इकाई : 1

भाषा का उद्भव, विकास, भाषा की परिभाषा, स्वरुप, विशेषताएं

भाषा की प्रकृति एवं विविध रूप, भाषा और बोली में अंतर, भारतीय भाषा परिवार

इकाई : 2

राजभाषा, राष्ट्र भाषा, संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी, संविधान में हिन्दी

संप्रेषण की अवधारणा और महत्व, सम्प्रेषण तकनीक

इकाई : 3

देवनागरी लिपि की विशेषताएं एवं सुधार के प्रयास, हिन्दी का मानकीकरण

हिन्दी की वर्ण-माला : स्वर एंव व्यंजन, वर्णों का उच्चारण स्थान, अघोष, सघोष, अल्पप्राण, महाप्राण

इकाई : 4

साहित्य की विधाएँ : व्याख्या व आलोचनात्मक अध्ययन

कहानी -

गुंडा : जयशंकर प्रसाद

पालगोमरा का स्कूटर : उदय प्रकाश

कविता -

रश्मिरथी का आरंभिक अंश : रामधारी सिंह दिनकर

कामायनी (चिंता सर्ग) : जयशंकर प्रसाद

इकाई : 5

फिल्म समीक्षा : मंथन, भुवन सोम

पुस्तक समीक्षा : संस्कृति के चार अध्याय (रामधारी सिंह दिनकर)

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी भाषा, हरदेव बाहरी

2. कामायनी : जयशंकर प्रसाद : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3. नई कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति : देवीशंकर अवस्थी : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4. एक दुनिया : समानांतर : राजेन्द्र यादव : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. नयी कविता : एक साक्ष्य : रामस्वरुप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद।

Course Learning Outcomes :

- आधार पाठ्यक्रम के रुप में तैयार किये गए इस प्रश्नपत्र के माध्यम से हम विद्यार्थियों में हिन्दी के सर्जनात्मक साहित्य के साथ-साथ उसके कलारुपों की सामान्य समझ विकसित कर सकेंगे।
- भाषा के बनने में व्याकरण के उपसर्ग, प्रत्यय एवं अन्य अवयवों का ज्ञान, नवीन परिवर्तनों के शब्दों को गढ़ने और भाषा को प्रभावशाली रुप में ढालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- भाषा का अपना एक समाज होता है। समाज की निर्मिति को बेहतर तरीके प्रदर्शित करने के लिए भाषा का ज्ञान आवश्यक है।
- हिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च शिक्षाप्राप्त विद्यार्थियों से न्यूनतम अपेक्षा है कि वे अपनी भाषा की सामान्य विशेषताओं, लिपि और उसकी संवैधानिक स्थिति आदि के साथ-साथ उसके साहित्य से उनका सामान्य परिचय जरुर हो।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	1	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

प्रश्न पत्र – प्रथम (कोर प्रश्न-पत्र)

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPBTT1	**हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- हिन्दी के नवजागरण कालीन साहित्य का अध्ययन करना
- हिन्दी के नए स्वरुप से परिचित होना
- हिन्दी गद्य की सभी विधाओं के सूत्रपात का अध्ययन करना
- आधुनिकता की अवधारणा
- पारिवारिक विघटन और सामाजिक यथार्थ की पहचान करना
- वैयक्तिक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक मूल्यों का साहित्यिक अध्ययन

Syllabus Content :

इकाई : 1

आधुनिकता की अवधारणा,
हिन्दी गद्य एवं आधुनिकता का अंतर्संबंध,
हिन्दी-उर्दू विवाद, खड़ी बोली के विकास की पृष्ठभूमि।
भारतीय नवजागरण की संकल्पना, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती पत्रिका
आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि

इकाई : 2

आधुनिक हिन्दी कविता
खड़ी बोली काव्य का विकास : प्रारम्भिक चरण (भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन कविता)
भारतेंदु युग : प्रमुख पत्र पत्रिकाएं, साहित्यिक प्रवृत्तियां एवं विभिन्न गद्य विधाओं का उदय और विकास,
द्विवेदी युग : ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक परिस्थितियां
मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा।
हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा, हिन्दी की जातीय चेतना के विकास में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका।

इकाई : 3

छायावाद : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ
प्रगति वाद : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ
प्रयोगवाद : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ
नई कविता : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ
समकालीन हिन्दी कविता : प्रमुख कवि एवं काव्य प्रवृत्तियाँ

इकाई : 4

हिन्दी गद्य : उद्भव और विकास

हिन्दी गद्य तथा भारतेन्दु

हिन्दी गद्य की विविध विधाएं : संक्षिप्त परिचय

हिन्दी गद्य के विकास में महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगी लेखकों की भूमिका

इकाई : 5

हिन्दी नाटक और रंगमंच : स्वरुप और विकास

हिन्दी आलोचना का आरंभ और विकास

हिन्दी कथा साहित्य के विकास के विविध चरण

हिन्दी कहानी और हिन्दी उपन्यास : आदर्शवाद एवं यथार्थवादी चेतना

प्रेमचंद युग, छायावाद, प्रसाद युग, प्रगतिशील साहित्य की प्रवृतियां, समकालीन साहित्य।

हिन्दी के अन्य गद्य रुपों का विकास

समकालीन विमर्श : सामान्य परिचय ।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी का गद्य साहित्य : रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. भारतेंदु युग और हिन्दी गद्य की विकास परंपरा : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिन्दी पत्रकारिता : कृष्ण बिहारी मिश्र, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
4. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. भारतीय हिंदू एवं द्विवेदी युगीन भाषा चिंतन और पंडित गोविंद नारायण मिश्र : डॉ. जया सिंह, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : नामवर सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. हिन्दी आलोचना के बीज शब्द : बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. हिन्दीसाहित्य का इतिहास : डॉ. नगेन्द्र, मयूर प्रकाशन, दिल्ली

Course Learning Outcomes :

- हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल का इतिहास वास्तव में आधुनिक भारत के इतिहास का भी अध्ययन है।
- प्रथम स्वाधीनता संघर्ष से लेकर आजादी और फिर उसके बाद के राजनीतिक उतार चढ़ाव की समग्र सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि का ब्यौरेवार अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।
- जिसको आधार बनाकर स्वतंत्रता पूर्व औपनिवेशिक भारत के स्वरूप और स्वातंत्र्योत्तर भारत में औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का समाजशास्त्रीय अध्ययन संभव है।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	2	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

प्रश्न पत्र – द्वितीय (कोर प्रश्न-पत्र)

कथेतर गद्य विधाएं

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPBTT2	**कथेतर गद्य विधाएं**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- इतिहास बोध की परम्परा का अध्ययन
- जीवनानुभवों का आत्मीय संप्रेषण
- स्वाधीनता संग्राम के विकास की प्रक्रिया का अध्ययन
- संस्कृतिकरण की समझ विकसित करना
- पारिवारिक विघटन और सामाजिक यथार्थ की पहचान करना
- वैयक्तिक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक मूल्यों का साहित्यिक अध्ययन

Syllabus Content:

प्रथम इकाई

कथेतर गद्य विधाएँ : स्वरुप और विकास

हिन्दी गद्य की निर्माण-भूमि : फोर्ट विलियम कॉलेज

भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य :

गिलक्राइस्ट, सदल मिश्र, इंशा अल्ला खाँ, सदासुख लाल, शिवप्रसाद सितारे हिन्द एवं राजा लक्ष्मण सिंह का योगदान।

भारतेन्दु युगः आधुनिकता और हिन्दी गद्य का अन्तर्सम्बन्ध, गद्य की भाषा, खडी बोली की निर्माण-भूमि।

हिन्दी गद्य के विकास में द्विवेदी युग का महत्व। रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, रिपोर्ताज, व्यंग्य एवं निबंध का उद्भव और विकास।

द्वितीय इकाई

हिन्दी निबंध : स्वरुप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

कविता क्या है : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

युद्ध और स्त्री : महादेवी वर्मा

संस्कृति और सौन्दर्य : नामवर सिंह

यात्रा वृत्तांत : स्वरुप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

मेरी तिब्बत यात्रा : राहुल सांकृत्यायन

चीड़ों पर चाँदनी : निर्मल वर्मा

तृतीय इकाई

संस्मरण : स्वरुप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

मंटो मेरा दुश्मन : उपेन्द्र नाथ अश्क

जीवनी : स्वरुप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

आवारा मसीहा : विष्णु प्रभाकर

चतुर्थ इकाई

आत्मकथा : स्वरूप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

शिकंजे का दर्द : सुशीला टाकभौरे

एक कहानी यह भी : मन्नू भण्डारी

रेखाचित्र : स्वरूप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

ठकुरी बाबा : महादेवी वर्मा

व्यंग्य : स्वरूप और विकास

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

भोलराम का जीव : परसाई

पंचम इकाई

हिन्दी नाटक और रंगमंच : उद्भव और विकास

हिन्दी नाटक और रंगमंच : आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभाव

नाटक और रंगमंच का अंतर्सम्बन्ध

नाटक और रंगमंच के तत्त्व, धाराएं और शैलियाँ (पारसी, यथार्थवादी, असंगत, परम्पराशील, लोकनाट्य, कहानी का रंगमंच)

स्वातंत्र्योत्तर रंग दृष्टि और स्वरूप

मोहन राकेश का नाट्य चिंतन और आषाढ़ का एक दिन (व्याख्या और आलोचना)

भारतेन्दु का रंग चिंतन और अंधेर नगरी

जयशंकर प्रसाद का नाट्य चिंतन और ध्रुवस्वामिनी

धर्मवीर भारती - अंधा युग : मिथक / इतिहास के माध्यम से (व्याख्या एवं आलोचना) समकालीन समय की व्यथा कथा

सिंदूर की होली : लक्ष्मी नारायण लाल : व्याख्या एवं आलोचना

सहायक ग्रन्थ :

1. गद्य साहित्य का इतिहास : रामचंद्र तिवारी।
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी।
3. भारतेंदु युग और हिन्दी गद्य की विकास-परम्परा : बच्चन सिंह।
4. भारतेंदु युग : रामविलास शर्मा।
5. रस्साकशी : वीर भारत तलवार।
6. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास: विश्वनाथ त्रिपाठी।
7. निराला की साहित्य साधना : भाग -1 : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ' : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. चिंतामणि, भाग -1 : आ. रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. समीक्षा की समस्याएं : गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
11. कविता के नए प्रतिमान : नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. गुलामगिरी : ज्योतिबा फुले, फारवर्ड प्रेस, नई दिल्ली।
13. समय और संस्कृति : श्यामा चरण दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन : एम. एन. श्रीनिवास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की अनुगूँज हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गए निबंधों में और साहित्य की दूसरी विधाओं में प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से सुनाई देने लगा है ।
- इसका अध्ययन मूलतः स्वतंत्रता संघर्ष के विकास का भी अध्ययन है।
- तत्कालीन समाज व्यवस्था में निर्देशित सामाजिक मूल्यों का अध्ययन ज़रुरी है ।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	2	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

प्रश्न पत्र – तृतीय (कोर प्रश्न-पत्र)

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPBTT3	**पाश्चात्य काव्यशास्त्र**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों के विवेचन और विश्लेषण से परिचित कराना ।
- साहित्य की सुदीर्घ परम्परा का अवलोकन कराना ।
- कला जीवन के लिए या कला कला के लिए है । कला के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करना ।
- साहित्य के नए प्रतिमानों, स्वच्छंदतवादी आलोचना का अध्ययन करना ।
- पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांत और वाद का अध्ययन करना ।

Syllabus Content :

इकाई : 1

- पाश्चात्य साहित्य चिंतन की परंपरा
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन पर विविध अनुशासनों का प्रभाव ।
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन के इतिहास की रुपरेखा

इकाई : 2

- प्लेटो एवं अरस्तू की स्थिति और उनके सिद्धान्त : विरेचन, अनुकरण, ट्रैजिडी तथा लिरिक महाकाव्य
- रोमीय एवं मध्ययुगीन काव्यशास्त्र
- पुनर्जागरण एवं नवशास्त्रवादी युग - शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय प्रतिमानों की मांग, निर्णयात्मक आलोचना की प्रगति।

इकाई : 3

- स्वछंदतावादी युग के प्रतिमान, दर्शन तथा पृष्ठभूमि, स्वच्छन्दतावादी आलोचना की स्थिति
- वड्र्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धांत
- कालरिज़ : कल्पना और फैन्टेसी सिद्धांत
- लॉनजाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई : 4

- क्रोचे की सौन्दर्य दृष्टि एवं आलोचना, अभिव्यंजनावाद ।
- आधुनिक युग में आलोचना की स्थिति तथा नई समीक्षा
- टी. एस. इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, परंपरा का सिद्धांत
- आई ए रिचड्र्स : मूल्य, सम्प्रेषण और काव्य-भाषा सिद्धांत

इकाई : 5

- विशिष्ट समकालीन आलोचक तथा उनके सिद्धान्त : रोलाबार्थ, देरिदा : संरचना, पाठ और विच्छेदन।
- रुपवाद, रुसीरुपवाद, नई समीक्षा मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब

सहायक ग्रंथ :

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा : डॉ0 नगेंद्र, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली।
2. संस्कृत काव्यशास्त्र : बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3. काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. पाश्चात्य साहित्य-चिंतन : निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेंद्रनाथ शर्मा, मयूर बुक्स, इंदौर।
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धांत और वाद : सूर्य प्रसाद दीक्षित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- पाश्चात्य और भारतीय आचार्य कला का मूल्यांकन किन आधारों पर कैसे किया करते थे ? उन मूलभूत आधारों में दृष्टिगत भिन्नता और समानता के तत्वों का अध्ययन इस प्रश्नपत्र की मूल अंतर्वस्तु है।
- पाश्चात्य विचारकों के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी आलोचना की नयी-नयी धाराओं को स्पष्ट किया सकेगा ।
- साहित्य का चिंतन और समाज एक दूसरे के सापेक्ष दिखाई देते हैं । इस पक्ष को स्पष्ट किया जा सकेगा ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	1	2	3	2	1	3	2	3	2	3	3
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	2	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

प्रश्न पत्र – चतुर्थ (वैकल्पिक)

भाषा विज्ञान

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPBTD1	**भाषा विज्ञान**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- बोलियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन
- भाषा का सामाजिक महत्व
- देवनागरी लिपि के विकास-क्रम और वैज्ञानिकता का अध्ययन
- हिन्दी की भाषिक संरचना का महत्व
- हिन्दी भाषा के तमाम पहलुओं से अवगत होना।
- भाषा कौशल क्षमता को प्रोत्साहित करना।
- देवनागरी लिपि और राजभाषा की समझ विकसित करना।

Syllabus Content :

इकाई : 1

- ❖ भाषा विज्ञान - परिभाषा एवं स्वरुप, भाषा की उत्पत्ति
- ❖ भाषा विज्ञान की शाखाएँ
- ❖ ध्वनि विज्ञान : ध्वनियों का वर्गीकरण और विशेषताएं
- ❖ स्वनिम् विज्ञान एवं स्वनिम प्रक्रिया, ध्वनि परिवर्तन
- ❖ स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं

इकाई : 2

- ❖ रुप विज्ञान (पद विज्ञान) शब्द एवं रुप
- ❖ रुप, संरुप, रुपिमों का स्वरुप, रुपिमों का वर्गीकरण
- ❖ वाक्य विज्ञान, वाक्य रचना, वाक्य परिवर्तन, वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन के कारण एवं दिशाएं
- ❖ शब्दार्थ संबंध : अर्थ परिवर्तन के कारण

इकाई : 3

- ❖ प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं का अति संक्षिप्त परिचय
- ❖ अपभ्रंश, अवहट्ट तथा पुरानी हिन्दी की तुलनात्मक विशेषताएँ
- ❖ हिन्दी की उपभाषाओं का संक्षिप्त परिचय
- ❖ हिन्दी बोलियों की संक्षिप्त विशेषताएँ

इकाई : 4

- ❖ काव्य भाषा के रुप में अवधी, ब्रज, खड़ीबोली का विकास
- ❖ मानक हिन्दी का व्याकरण

इकाई : 5

- ❖ देवनागरी लिपि का ऐतिहासिक विकास क्रम

- ❖ देवनागरी लिपि का मानकीकरण
- ❖ देवनागरी लिपि वैज्ञानिकता एवं व्यावहारिकता

सहायक ग्रंथ :

1. 'हिन्दी भाषा' : हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति पब्लिकेशन, जोधपुर।
2. 'भाषा विज्ञान' : भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
3. 'भाषा विज्ञान की भूमिका' : देवेंद्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. 'हिन्दी शब्दानुशासन' : किशोरीदास वाजपेई, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
5. 'भारत की भाषा समस्या' : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. 'हिन्दी व्याकरण' : कामता प्रसाद गुरु, पराग प्रकाशन, दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- भाषा एक सामाजिक और अर्जित संपत्ति है। भाषा के विकास में सामाजिक विकास एक मुख्य कारक होता है।
- ध्वनि परिवर्तन, अर्थ परिवर्तन आदि भाषा के नाना रुपों में होने वाले परिवर्तनों के मूल में सामाजिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक कारण होते हैं।
- बोलियों के सामाजिक साहित्यिक योगदान में राजनीति आदि की भूमिका उसके स्वरुप का व्यापक अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।
- हिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च शिक्षाप्राप्त विद्यार्थियों से न्यूनतम अपेक्षा है कि वे अपनी भाषा की सामान्य विशेषताओं, लिपि और उसकी संवैधानिक स्थिति आदि के साथ-साथ उसके साहित्य से उनका सामान्य परिचय जरुर हो।
- इसे ही ध्यान में रखकर यह आधार पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसकी पूर्ति इस पाठ्यक्रम से संभव हो सकेगी।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	2	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	1	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – II

प्रश्न पत्र – चतुर्थ (वैकल्पिक)

जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD2	**जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और स्वरुप से परिचित करना।
- हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के क्रमिक विकास से परिचित कराना।
- संचार क्रान्ति के दौर में मीडिया (प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक, सोशल मीडिया आदि) से परिचित कराना।
- वैश्वीकरण, बाजारवाद, विकास की अवधारणा, औद्योगिकीकरण आदि प्रमुख मुद्दों के बदलते स्वरुप का विश्लेषण करना।

Syllabus Content :

इकाई : 1

पत्रकारिता एवं जनसंचार
पत्रकारिता की अवधारणा और उसके विविध रुप
जनसंचार के रुप में पत्रकारिता
हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता

इकाई 2

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास
हिन्दी पत्रकारिता की विकास-यात्रा
स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात की हिन्दी पत्रकारिता
स्वतंत्रता आंदोलन, हिन्दी पत्रकारिता और प्रतिबंधन
हिन्दी की प्रमुख पत्रिकाएँ, संपादक एवं पत्रकार-

सरस्वती, प्रताप, माधुरी, चाँद, हंस, कर्मवीर, कल्पना, प्रतीक, धर्मयुग, पहल, नया ज्ञानदोय, आलोचना, प्रतिमान, अकार।
महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, राजेंद्र माथुर।

इकाई 3

पत्रकारिता अभिव्यक्ति, विधि, प्रेस संबंधी प्रमुख कानून और आचार संहिता
भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार
मानवाधिकार एवं सूचना का अधिकार
लोकतन्त्र में चतुर्थ स्तम्भ के रुप में पत्रकारिता का दायित्व
प्रेस से संबन्धित प्रमुख संस्थाएं

इकाई 4

व्यावहारिक पत्रकारिता
समाचार निर्माण समाचार के विभिन्न स्रोत, समाचार संकलन तथा लेखन
शीर्षकीकरण, आमुख और समाचार प्रस्तुति, कैप्शन, प्रूफ संशोधन, ले आउट एवं पृष्ठ सज्जा
समाचार पत्रों में विभिन्न स्तंभों की योजना, समाचार की भाषा
समपादकीय विभाग, उसके विविध अंग और कर्तव्य

संवाददाता की अर्हता, उनकी श्रेणियाँ, कार्य पद्धति एवं नैतिक उत्तरदायित्व ।

इकाई : 5

पत्रकारिताः सृजनात्मक लेखन एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया

पत्रकारिता से संबन्धित लेखन प्रविधियाँ संपादकीय, रिपोर्ट, फीचर, साक्षात्कार, स्तम्भ लेखन, विज्ञापन लेखन।

इलेक्ट्रानिक मीडिया की पत्रकारिता रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट की पत्रकारिता।

पत्रकारिता और राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे : वैश्वीकरण, बाजारवाद, विकास की अवधारणा, लोकतन्त्र, राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि।

प्रिन्ट मीडिया का बदलता स्वरुप ।

पत्रकारिता का प्रतिपक्ष, सोशल मीडिया : दशा और दिशा ।

सहायक ग्रंथ :

1. हिन्दी पत्रकारिता : कृष्णबिहारी मिश्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
2. संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र : रेमण्ड विलियम्स, ग्रंथ शिल्पी, (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
3. साक्षात्कार : सिद्धांत और व्यवहार : रामशरण जोशी, हिन्दी बुक सेंटर, हैदराबाद।
4. संस्कृति विकास और संचार क्रांति : पी. सी. जोशी, ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- आधुनिक युग सूचना क्रान्ति तथा संचार प्रौद्योगिकी के रूप में जाना जा रहा है।
- हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास स्वतंत्रता आंदोलन में उसकी भूमिका, उसका स्वरुप, उसकी चुनौतियां तथा आज के युग में उसकी भूमिका का अध्ययन इस पाठ्यक्रम के माध्यम से संभव हो सकेगा।
- यह पाठ्यक्रम वैकल्पिक विषय के रुप में मीडिया के नाना रुपों में हिन्दी की संभावना के मद्देनजर तैयार किया गया है।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	3	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	1	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र– प्रथम(कोर प्रश्न-पत्र)

कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTT1	**कथा साहित्य (उपन्यास एवं कहानी)**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- मध्यवर्गीय समाज की अवधारणा का अध्ययन
- अजनबीपन, कुंठा, एकाकीपन के सामाजिक प्रभाव का अध्ययन
- पारिवारिक विघटन और सामाजिक यथार्थ की पहचान करना
- वैयक्तिक अभिव्यक्ति एवं सामाजिक मूल्यों का साहित्यिक अध्ययन

Syllabus Content :

इकाई : एक

हिन्दी कहानी का उद्भव, विकास और परंपरा, हिन्दी कहानी के तत्व

प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन एवं प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी : प्रमुख कहानीकार

समकालीन कहानी : समय और सन्दर्भ, विभिन्न कहानी आन्दोलन .

इकाई : दो

हिन्दी उपन्यास का उद्भव, विकास और परंपरा ,हिन्दीउपन्यास के तत्व

प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन एवं प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास : प्रमुख उपन्यासकार

समकालीन उपन्यास : समय और सन्दर्भ

इकाई : तीन

हिन्दी कहानियों की व्याख्या एवं आलोचना

ठाकुर का कुआं : प्रेमचंद

दुलाई वाली : बंग महिला

रोज़ : अज्ञेय

परिंदे : निर्मल वर्मा

जहां लक्ष्मी कैद है : राजेन्द्र यादव

मिस पाल : मोहन राकेश

छतरी : ओमप्रकाश वाल्मीकि

तीसरी कसम : फरीश्वर नाथ रेणु

सिक्का बदल गया : कृष्णा सोबती

इकाई : चार

हिन्दी उपन्यास की व्याख्या एवं आलोचना

प्रेमचंद : गोदान

फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल

भीष्म साहनी : तमस

जगदीश चंद्र : धरती धन न अपना

हजारी प्रसाद द्विवेदी : बाणभट्ट की आत्मकथा

इकाई : पाँच

हिन्दीतर कहानियों की व्याख्या एवं आलोचना

असमी : पुत्र कामना : इंदिरा गोस्वामी

उर्दू : मंटो : टोबा टेक सिंह

मराठी : साहब, दीदी और गुलाम : दया पवार

गुजराती : जगा-धूला का जमाना : रघुवीर चौधरी

बांग्ला : रवि और तीन व्यक्ति : सुनील गंगोपाध्याय

सहायक ग्रंथ :

1. 'उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता' : वीरेंद्र यादव : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'परम्परा का मूल्यांकन' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. 'हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा' : रामदरश मिश्र : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'उपन्यास की भारतीयता और हिन्दी आलोचना' : शम्भुनाथ मिश्र : ज्ञान भारती प्रकाशन, दिल्ली।
5. चयनम, संपादक अरुण प्रकाश, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

Course Learning Outcomes :

- आधुनिक भारत के सौ सालों की सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों-परिस्थितियों, समाज की छोटी इकाई के रूप में परिवारों की संरचना में आ रहे बदलावों, उसके यथार्थ का अध्ययन करने के लिए इस प्रश्न पत्र का विशेष महत्व है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।
- उपन्यास का अपना एक देश होता है । इससे भारतीय समाज को नए सन्दर्भों में देखने का प्रयास होगा ।
- हिन्दी कहानी का बाजार विभिन्न चैनलों द्वारा प्रसारित धारावाहिकों, वेबसीरीज और समानान्तर सिनेमा से लेकर व्यावसायिक सिनेमा के भीतर समृद्धतम रुप में समृद्ध और संभावनाशील है।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	3	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र – द्वितीय (कोर प्रश्न-पत्र)

आधुनिक काव्य

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTT2	**आधुनिक काव्य**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective:

- आधुनिक काल की प्रमुख प्रवृतियों से परिचित कराना
- आधुनिकता की अवधारणा और मनुष्य के अंतःसंबंध का विश्लेषण करना ।
- वैश्वीकता और आधुनिकता के प्रमुख क्रमिक विकास का विश्लेषण करना ।
- पुनरुत्थानवाद की क्रांतिकारी भूमिका
- हिन्दी के पुनर्जागरण और नवजागरण कालीन साहित्य का अध्ययन करना
- हिन्दी के नए स्वरुप, शिल्प से परिचित होना

Syllabus Content:

इकाई : 1

आधुनिक हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि और नए संदर्भ
हिन्दी कविता का नया युग युगीन भावना, चिन्तन, विषयवस्तु, भाषा, काव्यरुप, शैली-शिल्प
आधुनिक युग की रचनात्मक चुनौतियाँ और हिन्दी का आख्यानमूलक काव्य
मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-यात्रा और साकेत : राष्ट्रीय चेतना, युगीन आदर्श, नारी भावना और काव्यत्व
कविताओं की व्याख्या एवं आलोचना

मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम सर्ग)
मुकुटधर पांडेय : ग्राम्य जीवन

इकाई : 2

छायावादी काव्यांदोलन : उद्भव एवं विकास, नवीन रचना-दृष्टि और सौन्दर्य भावना
छायावाद : काव्य-यात्रा एवं विकास प्रक्रिया
प्रमुख स्तम्भ कवि जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा : काव्य यात्रा एवं नए संदर्भ
महादेवी के काव्य में स्वाधीन चेतना और गीतिकाव्य तत्व
कामायनी : प्रेरणा, कल्पना, विषयवस्तु, जीवन दर्शन, युगीन संदर्भ, महाकाव्यत्व, आलोचना-प्रक्रिया
पंत की काव्य यात्रा के विविध सोपान
कविताओं की व्याख्या एवं आलोचना

महादेवी वर्मा : बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ
जयशंकर प्रसाद : कामायनी (इड़ा-सर्ग)
सुमित्रानंदन पंत : परिवर्तन, चरखा गीत, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : राम की शक्ति पूजा, जागो फिर एक बार

इकाई : 3

प्रगतिवाद : काव्य-यात्रा एवं विकास प्रक्रिया
कविताओं की व्याख्या एवं आलोचना

नागार्जुन : कालिदास सच-सच बतलाना, बादल को घिरते देखा है

केदारनाथ अग्रवाल : बसंती हवा, माझी बंसी न बजाओं मेरा मन डोलता, जो जीवन की धूल चाटकर बड़ा हुआ

त्रिलोचन : चम्पा काले नहीं चीन्हती, नगई महरा

इकाई : 4

प्रयोगवाद : काव्य-यात्रा एवं विकास प्रक्रिया

कविताओं की व्याख्या एवं आलोचना

अज्ञेय : असाध्य वीणा, यह दीप अकेला

इकाई : 5

नई कविता : काव्य-यात्रा एवं विकास प्रक्रिया

कविताओं की व्याख्या एवं आलोचना -

जगदीश गुप्त : आँख भर देखा कहाँ, हिमशिखरों पर बादल

मुक्तिबोध : अंधेरे में, ब्रह्मराक्षस

गिरिजा कुमार माथुर : नया कवि, लोकतंत्र, कौन थकान हरे जीवन

शमशेर बहादुर सिंह : बात बोलेगी

भवानी प्रसाद मिश्र : गीत फ़रोश

विजयदेव नारायण साही : मछली घर, मेरे साथ कौन आता है

श्रीकांत वर्मा : हस्तिनापुर में बोलने का रिवाज नहीं है, कौशल में विचारों की कमी है, हस्तक्षेप

सहायक ग्रंथ :

1. 'छायावाद' : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां' : नामवर सिंह : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. 'कविता के नए प्रतिमान' : नामवर सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. 'कविता समय' : डॉ. गौरी त्रिपाठी : उत्कर्ष प्रकाशन, कानपुर।
5. 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' : रामविलास शर्मा : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. 'कविता का जनपद' : अशोक वाजपेयी : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. 'नयी कविता : एक साक्ष्य' : रामस्वरूप चतुर्वेदी : लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. 'समकालीन कविता का व्याकरण' : परमानंद श्रीवास्तव : शुभदा प्रकाशन, दिल्ली।
9. 'कामायनी : एक पुनर्विचार' : मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes

- 20वीं सदी में भारतीय समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में मध्यवर्ग की प्रभावी भूमिका बनने लगी थी।
- समाज को देखने का उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, आदर्शपरक जीवन-मूल्य, कल्पनाशीलता, वैचारिक आग्रह आदि इस युग की आधुनिक काव्य में नाना शिल्प विधान के साथ मूर्तमान हो उठे थे।
- इस प्रश्न पत्र का अध्ययन बीसवीं सदी के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक हलचलों का एक साथ अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्र्योत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र – तृतीय(वैकल्पिक)

आधुनिक विमर्श

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD1	**आधुनिक विमर्श**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- 21 वीं सदी के साहित्य से परिचय कराना ।
- उत्तर आधुनिकता की साहित्यिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना ।
- साहित्य के प्रमुख विमर्शों का अध्ययन कराना ।
- स्त्रीवादी आंदोलनों के अंतर्वस्तु व विचारधारा से परिचित कराना ।
- साहित्य को देखने की एक नई दृष्टि विकसित कराना ।

Syllabus Content :

इकाई : 1

विमर्श : सिद्धांत एवं स्वरुप

स्त्रीवाद एवं स्त्री विमर्श: सिद्धान्त और अवधारणाएँ, स्त्रीवाद और जेण्डर-विमर्श

स्त्रीमुक्ति आंदोलन / स्त्रीवादी आंदोलन: ऐतिहासिक विकास, प्रमुख मुद्दे

प्रगतिशील साहित्य में स्त्री-मुक्ति का प्रश्न एवं अवधारणा

स्त्रीवादी / स्त्रीमुक्ति की समकालीन (उत्तर-आधुनिक, उत्तर-औपनिवेशिक) अवधारणाएँ

इकाई : 2

मध्यकालीन साहित्य एवं नवजागरणकालीन साहित्य में स्त्री-प्रश्न और स्त्री लेखन

स्त्री पत्रकारिता - प्रमुख पत्रिकाएँ, मुख्य प्रश्न, आधुनिक स्त्री वैचारिकी का निर्माण

समकालीन लेखन में स्त्री की उपस्थिति और उनका साहित्य

कविता में स्त्री और स्त्री की कविता : अंतर्वस्तु और विचारधारा, स्त्रीवादी कविता की काव्यभाषा, मुहावरा, लेकगीतों में स्त्री

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचना

इस स्त्री से डरो, कविता की जगह, सफल नागरिक : कात्यायनी

आधा शहर : उषा प्रियंवदा

श्रृंखला की कड़ियाँ : महादेवी वर्मा

अन्या से अनन्या : प्रभा खेतान

इकाई : 3

दलित विमर्श : भाषा, वैचारिकी एवं सौन्दर्यशास्त्र

दलित विमर्श एवं साहित्य के वैचारिक व दार्शनिक स्रोत : उत्तर अम्बेडकर दलित चिंतन व प्रमुख संदर्भ बिन्दु

दलित साहित्य की अवधारणा एवं विकास की परम्परा, समाजशास्त्र, सौन्दर्य दृष्टि, अध्ययन और आलोचना

हिन्दी साहित्य में दलित निराला, प्रेमचंद, नागार्जुन और राहुल सांकृत्यायन का दलित विषयक लेखन

हिन्दी दलित कविता की पृष्ठभूमि : अस्मिता का संघर्ष, विषयवस्तु, इतिहास बोध, सौंदर्य दृष्टि और काव्य भाषा एवं शिल्प

दलित साहित्य एवं चिंतन में स्त्री और दलित स्त्री

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचना

ठाकुर का कुँआ	: प्रेमचंद
सदियों का संताप	: ओमप्रकाश वाल्मीकि
गुलामगिरी की प्रस्तावना	: ज्योतिबा फुले
जूठन	: ओमप्रकाश वाल्मीकि
टूटे पंखों से परवाज	: सुमित्रा महरोल
हीरा डोम	: अछूत की शिकायत

इकाई : 4

अदिवासी विमर्श : पृष्ठभूमि, आदिवासी संस्कृति और साहित्य की अवधारणा

आदिवासी भाषाओं का सामान्य परिचय

वाचिकता : पुरखा साहित्य, आदिवासी साहित्य को निर्मित करने वाले तत्व

आदिवासी लोक, आदिवासी दर्शन और साहित्य

हिन्दी साहित्य में आदिवासी समाज और संस्कृति की अभिव्यक्ति : प्रमुख आदिवासी विमर्शकार

निर्धारित पाठ : व्याख्या एवं आलोचना (कविताएं)

वीणा (सुशीला सामद), पहाड़ के बच्चे (तेलसुला आओ), कथन शालवन के अंतिम शाल का (रामदयाल मुंडा)

स्टेज (वाहरु सोनवने), एक और जनी का शिकार (ग्रेस कुजूर)

आघोषित उलगुलान (अनुज लुगुन), नदी, पहाड़ और बाजार (जसिंता केरकेट्टा)

धरती लहराएगी : एलिस एक्का

बस्तर-बस्तर : लोक बाबू

इकाई : 5

अन्य विमर्श : सामान्य परिचय एवं अवधारणा

किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, वृद्ध विमर्श, विकलांग विमर्श आदि

सहायक ग्रंथ :

1. कामरेड का कोट : सृंजय, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र : ओमप्रकाश वाल्मिकि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. जाति व्यवस्था : सच्चिदानंद सिन्हा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
5. नारी प्रश्न : सरला माहेश्वरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. स्त्री विमर्श भारतीय परिप्रेक्ष्य : डॉ. के. एम. मालती, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ : प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. आधुनिकता के आईने में दलित : सं. अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. सामाजिक न्याय और दलित साहित्य : सं. श्योराज सिंह बैचेन : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- बीसवीं सदी के अंतिम दशक से विश्व स्तर पर शीतयुद्ध की समाप्ति, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के वर्चस्व की वजह से साहित्य औरसमाज में उत्तर आधुनिक युग का प्रारंभ हुआ।
- साहित्य में सबाल्टर्न डिस्कोर्स की पृष्ठभूमि बननी शुरु हुई। जो अबतक हाशिये पर थे वे केंद्र बनने लगे।
- दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि की वैचारिकी उसकी परंपरा आदि का अध्ययन इस प्रश्न पत्र की विशेषता है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	1	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र– तृतीय (वैकल्पिक)

भारतीय साहित्य

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD2	**भारतीय साहित्य**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- साहित्य के संदर्भ में भारतीयता की अवधारणा का विश्लेषण करना ।
- भारतीय साहित्य को विभिन्न संदर्भों में देखे जाने की समझ विकसित करना ।
- स्वाधीनता संग्राम में भारतीय मूल्य एवं भारतीय साहित्य की भूमिका से परिचित कराना ।
- गद्य की विभिन्न विधाओं में भारतीयता व बहुसांस्कृतिकता का अध्ययन करना ।

Syllabus Content :

इकाई : 1

भारतीयता की अवधारणा : इतिहास, परंपरा, बहुभाषिकता, बहुसांस्कृतिकता
भारतीय साहित्य का स्वरुप व अध्ययन की समस्याएँ
भारतीय साहित्य : राष्ट्रवाद का उदय व आज के भारत का बिम्ब

इकाई : 2

भारतीय साहित्य का संक्षिप्त परिचय (बंगला, उड़िया, पंजाबी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़)
स्वाधीनता संग्राम में भारतीय मूल्य एवं भारतीय साहित्य की भूमिका
भारतीय भाषाएं एवं हिन्दी का अंतरसंबंध

इकाई : 3

कवितायें : व्याख्या और आलोचना
सबसे खतरनाक, मैं अब विदा लेता हूँ (पंजाबी) : अवतार सिंह 'पाश'
भारत तीर्थ, मुक्ति (बांग्ला) : रवीन्द्रनाथ नाथ टैगोर
धनबाद का खनिक (मलयालम) : के0 सच्चिदानंदन

इकाई : 4

उपन्यास और कहानियाँ : व्याख्या और आलोचना
उपन्यास : संस्कार (कन्नड़) : यू0 आर0 अनंतमूर्ति
उपन्यास: आग का दरिया (उर्दू) : कुर्रतुल ऐन हैदर
कहानी : ईश्वर (उड़िया) : प्रतिभा राय

इकाई : 5

नाटक और निबन्ध : व्याख्या और आलोचना

नाटक : तुगलक (मराठी) : गिरीश कर्नाड
निबन्ध: साहित्य का तात्पर्य (बांग्ला) : रवीन्द्र नाथ टैगोर
निबन्ध: शेफाली झर रही है (हिन्दी) : विद्यानिवास मिश्र

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. नगेन्द्र, भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
2. इन्द्रनाथ चौधरी, भारतीय साहित्य की प्रवृत्तियां
3. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, भारतीय साहित्य
4. सुकुमार सेन, बांग्ला साहित्य का इतिहास
5. कल्याणी दास, बांग्ला साहित्य का इतिहास
6. अरुण कुमार, चयनम, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

Course Learning Outcomes :

- बीसवीं सदी के अंतिम दशक से विश्व स्तर पर शीतयुद्ध की समाप्ति, भूमंडलीकरण और बाजारवाद के वर्चस्व की वजह से साहित्य औरसमाज में उत्तर आधुनिक युग का प्रारंभ हुआ। इन सभी पक्षों को आत्मसात कर सकेगा ।
- समाज को देखने का उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, आदर्शपरक जीवन-मूल्य, कल्पनाशीलता, वैचारिक आग्रह आदि इस युग की आधुनिक काव्य में नाना शिल्प विधान के साथ विद्यार्थी तादात्म्य स्थापित कर सकेगा ।
- विद्यार्थी भारतीय संस्कृति एवं भारतीय मूल्यों से परिचित हो सकेगा ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	2	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
स्नातकोत्तर हिन्दी
सेमेस्टर – III
प्रश्न पत्र– चतुर्थ (वैकल्पिक)
समकालीन कविता

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD3	**समकालीन कविता**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- साहित्य के संदर्भ में समकालीनता की अवधारणा का विश्लेषण करना ।
- समकालीन कविता को विभिन्न संदर्भों में देखे जाने की समझ विकसित करना ।
- स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मूल्यों में आए परिवर्तन एवं जनता के मोहभंग से परिचित कराना ।
- समकालीन कविता के प्रमुख नए शिल्प से परिचित कराना ।
- स्वातंत्र्योत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि विकसित करना ।

Syllabus Content:

इकाई : 1

'समकालीनता' का अर्थ, प्रसार, काल- निर्धारण एवं नामकरण
आधुनिकता और समकालीनता
नेहरु युग की समाप्ति के बाद का राजनीतिक परिदृश्य भारत-पाकिस्तान युद्ध, आपातकाल, आर्थिक उदारीकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अस्मितावादी राजनीति
समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

इकाई : 2

समकालीन हिन्दी कविता के कथ्य और शिल्प में राजकमल चौधरी, धूमिल और रघुवीर सहाय का योगदान
निर्धारित रचनाएं/रचनाकार व्याख्या और आलोचना

राजकमल चौधरी : मुक्ति प्रसंग
धूमिल : पटकथा
रघुवीर सहाय : अधिनायक

इकाई : 3

समकालीन हिन्दी कविता के आठवें एवं नवें दशक के कवि – भाग 1
निर्धारित रचनाएं/रचनाकार व्याख्या और आलोचना

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना : भेड़िया 1, भेड़िया 2, भेड़िया-3, जंगल का दर्द, पोस्टमार्टम की रिपोर्ट, इंतजार, भूख
दुष्यंत कुमार : कहाँ तो तय था चराग़ाँ हर एक घर के लिए, ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा
केदारनाथ सिंह : बाघ, अकाल में सारस

विनोद कुमार शुक्ल : रायपुर बिलासपुर संभाग, जो मेरे घर कभी नहीं आएंगे, हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

इकाई : 4

समकालीन हिन्दी कविता के आठवें एवं नवें दशक के कवि – भाग 2

निर्धारित रचनाएं/रचनाकार व्याख्या और आलोचना

अशोक वाजपेयी : पथहारा वक्तव्य, मौत की ट्रेन में दिदिया

राजेश जोशी : बिजली सुधारने वाले, उसके स्वप्न में जाने का यात्रा-वृतांत, बच्चे काम पर जा रहे है, अहद होटल, एक आदिवासी लड़की की इच्छा, इत्यादि

आलोक धन्वा : भागी हुई लड़कियाँ, ब्रुनो की बेटियाँ

वीरेन डंगवाल : इतने भले नही बन जाना साथी, हमारा समाज, उजले दिन जरूर आयेगें

मंगलेश डबराल : संगतकार, घर, पागलों का एक वर्णन

अष्टभुजा शुक्ल : पद कुपद (पद संख्या - 1,3,4,5,9)

इकाई : 5

समकालीन हिन्दी कविता के आठवें एवं नवें दशक के कवि – भाग 3

निर्धारित रचनाएं/रचनाकार व्याख्या और आलोचना

अनामिका : स्त्रियाँ, दरवाजा, मौसियाँ

चन्द्रकांत देवताले : शब्दो की पवित्रता के बारे में, मेरी किस्मत में यही अच्छा रहा, ट्रकों में बकरों की लदान

विष्णु खरे : टेबिल, लड़कियों के बाप, लालटेन जलाना

नीलेश रघुवंशी : स्त्री की नींद

निर्मला पुतुल : नगाड़े की तरह बजते शब्द

गगन गिल : एकदिन लौटेगी लड़की, दिन के दुख अलग थे

बद्रीनारायण तिवारी : प्रेमपत्र

सन्दर्भ-सूची

1. मोहन अवस्थी, आधुनिक काव्य शिल्प
2. उमाकांत गोयल, मैथिलीशरण गुप्त
3. प्रेमशंकर, प्रसाद का काव्य
4. नामवर सिंह, छायावाद
5. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां
6. दूधनाथ सिंह, महादेवी
7. रमेशचंद्र शाह, जयशंकर प्रसाद
8. डॉ. नगेन्द्र, साकेत : एक अध्ययन
9. शम्भुनाथ, मिथक और आधुनिक कविता
10. शिवकुमार मिश्र, आधुनिक कविता और युग सन्दर्भ

Course Learning Outcomes:

- 20वीं सदी में भारतीय समाज के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में मध्यवर्ग की प्रभावी भूमिका बनने लगी थी।
- समाज को देखने का उसका यथार्थवादी दृष्टिकोण, नैतिकता, आदर्शपरक जीवन-मूल्य, कल्पनाशीलता, वैचारिक आग्रह आदि इस युग की आधुनिक काव्य में नाना शिल्प विधान के साथ मूर्तमान हो उठे थे।
- इस प्रश्न पत्र का अध्ययन बीसवीं सदी के ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक हलचलों का एक साथ अध्ययन होगा।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्र्योत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6

CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – III

प्रश्न पत्र – चतुर्थ (वैकल्पिक)

साहित्य का समाजशास्त्र

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD4	**साहित्य का समाजशास्त्र**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- किसी भी समाज का लोक साहित्य समष्टि की सृजनशीलता का परिणाम होता है।
- किसी भी समाज की संस्कृति और जीवन मूल्यों को लोक साहित्य के माध्यम से पहचाना और जाना जा सकता-है।

Syllabus Content :

इकाई : 1

साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका

साहित्य और समाज का अन्तर्सम्बंध

साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की जरूरत एक स्वतंत्र साहित्य विधा का विकास

साहित्य के सामाजशास्त्र के इतिहास समाजशास्त्रीय दृष्टि से साहित्य के अध्ययन की परम्पराएं पाश्चात्य एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य

इकाई : 2

साहित्य के प्रमुख समाजशास्त्री और उनकी अवधारणाएँ

पाश्चात्य समाजशास्त्री : अडोल्फ तेन, लूसिए गोल्डमान, लियो लावेंथल, रेमण्ड विलियम्स

भारतीय समाजशास्त्री : डी.डी. कोसम्बी, पी.सी. जोशी, बी. आर. अम्बेडकर, एम. श्रीनिवासन, श्यामाचरण दुबे,

इकाई : 3

साहित्य के समाजशास्त्र की प्रमुख दृष्टियाँ और पद्धतियाँ :

साहित्य के समाजशास्त्र की प्रमुख दृष्टियाँ साहित्य में समाज की खोज, समाज में साहित्य और साहित्यकार की स्थिति, साहित्य और पाठक समुदाय, लोकप्रिय साहित्य का समाजशास्त्र, साहित्य और जनसंचार माध्यम

साहित्य के समाजशास्त्र की प्रमुख पद्धतियाँ विधेयवाद, अनुभववाद, संरचनावाद, मार्क्सवाद और अस्मितावाद

इकाई : 4

विधाओं का समाजशास्त्र साहित्यिक विधाओं की उत्पत्ति और विकास का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

उपन्यास का समाजशास्त्र भारत में उपन्यास का उदय और विकास; भारतीय उपन्यास की भारतीयता, उपन्यास और लोकतंत्र

हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण : गोरा (टैगोर), गबन (प्रेमचंद), रह गई दिशाएँ इसी पार (संजीव)

कविता के समाजशास्त्रीय अध्ययन की चुनौतियाँ हिन्दी कविता का समाजशास्त्रीय

विश्लेषण : प्राचीन काव्य, भक्तिकाव्य, रीति कविता, आधुनिक कविता, समकालीन कविता

इकाई : 5

समकालीन अस्मितामूलक साहित्य का समाजशास्त्र
दलित साहित्य का समाजशास्त्र उपन्यास दलित आत्मकथा, दलित कविता एवं दलित
स्त्री लेखन का समाजशास्त्र स्त्री आत्मकथा, स्त्री कविता एवं स्त्री केन्द्रित उपन्यास

सहायक ग्रंथ :

1. कला और संस्कृति : वासुदेव शरण अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. लोक संस्कृति और इतिहास : बद्रीनारायण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. लोक संस्कृति में राष्ट्रवाद : बद्रीनारायण, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
4. आँचलिकता और लोक जीवन : विनम्र सेन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. साहित्य का समाजशास्त्र, मैनेजर पाण्डेय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

Course Learning Outcomes :

- हमारा लोक साहित्य मूलतः समष्टि की सृजनशीलता के परिणाम हैं।
- लोक कथाएँ और लोक गीत नयी तकनीक के माध्यम से दृश्य चित्रों और मार्मिक गीतों के सचित्र प्रसार में व्यापक संभावनाएं समेटे हुए हैं।
- इसके मद्देनजर हमें परम्परागत हिन्दी का बाजार निर्मित करने की ओर ध्यान देना है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।
- लोक का अपना लोक होता है । उसे साहित्य के माध्यम से समझ से देखने का प्रयास होगा ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	2	3	3	2	2	2	3	3	1	2	3
CO 3	3	3	2	3	1	2	3	3	2	2	1	3
CO 4	3	2	2	2	2	1	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – IV

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – I

प्रश्न पत्र– प्रथम (कोर प्रश्न-पत्र)

हिन्दी आलोचना

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPATT2	**हिन्दी आलोचना**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- आलोचना विधा के सभी पहलुओं से परिचित कराना।
- प्रगतिवादी आलोचनाओं और उनके मुख्य स्थापनाओं और आलोचकों से परिचित कराना।
- नयी कविता आन्दोलन व नयी कहानी आन्दोलन का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
- उत्तरवादी सिद्धान्त और आलोचना के नए सिद्धांतों से परिचित कराना।
- रचना को देखने की नई दृष्टियों से परिचित कराना।
- साहित्य के पाठ की रणनीतियाँ और पुनर्पाठ के तमाम पहलुओं से परिचित कराना।

Syllabus Content:

इकाई : 1

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास, आरंभिक परिदृश्य

भारतेन्दु युगीन आलोचना : सामान्य परिचय

प्रमुख आलोचक : बालकृष्ण भट्ट

द्विवेदी युग : लाला भगवानदीन, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्र बन्धु, कृष्णबिहारी मिश्र, पद्मसिंह शर्मा,

इकाई : 2

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना

शुक्लानुवर्ती और शुक्लोत्तर आलोचक : एक सामान्य परिचय

शुक्लानुवर्ती आलोचक : डॉ. नगेन्द्र, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

शुक्लोत्तर आलोचक : नन्ददुलारे बाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी

इकाई : 3

प्रगतिवादी आलोचना : मुख्य स्थापनाएं

प्रगतिशील लेखक संघ और उसका घोषणा पत्र

शिवदान सिंह चौहान, राहुल सांकृत्यायन, अमृत राय

रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, मुक्तिबोध, मैनेजर पाण्डेय

इकाई : 4

नयी कविता आन्दोलन, नयी कहानी आन्दोलन : सामान्य परिचय

प्रमुख आलोचक : अज्ञेय, रामस्वरूप चतुर्वेदी, विजयदेवनारायण साही, लक्ष्मीकान्त वर्मा, मलयज, देवी शंकर अवस्थी

इकाई : 5

समकालीन हिन्दी आलोचना

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

पाठ की रणनीतियाँ और पुनर्पाठ

उत्तरवादी सिद्धान्त और आलोचना

दलित, स्त्री एवं आदिवासी विमर्श और हिन्दी आलोचना

प्रमुख आलोचक : निर्मला जैन, रोहिणी अग्रवाल, माधव हाड़ा, वंदना टेटे, डॉ. धर्मवीर

सन्दर्भ-सूची

1. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना
2. रामविलास शर्मा, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना
3. निर्मला जैन, हिन्दी आलोचना की बीसवीं सदी
4. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना
5. देवीशंकर अवस्थी, आलोचना का द्वंद्व
6. शिवकुमार मिश्र, यथार्थवाद
7. रमेश कुमार, नवजागरण और हिन्दी आलोचना
8. शिवकुमार मिश्र, हिन्दी आलोचना की परम्परा और रामचंद्र शुक्ल
9. कबीर के आलोचक, डॉ. धर्मवीर
10. आलोचना के सिद्धांत, शिवदान सिंह चौहान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
11. हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी, नन्द दुलारे बाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Course Learning Outcomes :

- हिन्दी आलोचकों के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी आलोचना की नयी-नयी धाराएं स्पष्ट हो सकेंगी।
- साहित्य का चिंतन और समाज एक दूसरे के सापेक्ष दिखाई देते हैं। इस पक्ष को स्पष्ट किया जा सकेगा।
- साहित्य के भीतर समाज को देखना और उसे परम्परागत दृष्टियों से रेखांकित करने की प्रवृत्ति विकसित होगी।
- भाषा और साहित्य को पढ़ने तथा उसके सामाजिक उपदेयों की समझ विकसित होगी।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	2	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
स्नातकोत्तर हिन्दी
सेमेस्टर – III
प्रश्न पत्र – द्वितीय (वैकल्पिक)
प्रयोजनमूलक हिन्दी

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPCTD2	**प्रयोजनमूलक हिन्दी**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- बोलियों के समाजशास्त्रीय अध्ययन से परिचित कराना ।
- भाषा के सामाजिक महत्व को स्पष्ट कराना ।
- देवनागरी लिपि के विकास-क्रम और वैज्ञानिकता का अध्ययन
- भाषा कौशल क्षमता को प्रोत्साहित करना ।
- भाषा कौशल क्षमता को प्रोत्साहित करना ।
- भाषा के अखिल भारतीय स्वरुप का अध्ययन व जानकारी ।
- हिन्दी भाषा का समाज और साहित्य के अंतरसंबंध का अध्ययन करना ।

Syllabus Content :

इकाई : 1

प्रयोजनमूलक हिन्दी: अभिप्राय और परिव्याप्ति
प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ
प्रयोजनमूलक हिन्दी, बोलचाल की हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अंतर
प्रयोजनमूलक हिन्दी के नामकरण की समस्या
प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रुप
प्रयोजनमूलक हिन्दी और राजभाषा से उसके सम्बन्ध
ई-लेखन के विविध आयाम : देवनागरी फाण्ट, यूनीकोड, राजभाषा-साफ्टवेयर

इकाई : 2

प्रयोजनमूलक हिन्दी का व्यावहारिक स्वरुप
टिप्पणी : स्वरुप एवं प्रकार
संक्षेपण: अर्थ एवं प्रक्रिया
प्रतिवेदन : अर्थ एवं विशेषताएं
प्रारुपण : महत्व और विशेषताएं
कार्यालयी पत्र के प्रकार : शासकीय-अर्द्धसरकारी पत्र, कार्यालयी आदेश, ज्ञापन, पृष्ठांकन, अधिसूचना, प्रेस विज्ञप्ति एवं परिपत्र

इकाई : 3

कार्यालयी हिन्दी की प्रकृति और उसका प्रयोग
कार्यालयी हिन्दी अर्थ एवं प्रकृति
कार्यालयी हिन्दी बोलचाल की हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी से अंतर
कार्यालयी हिन्दी की विशेषताएं
कार्यालयी हिन्दी की निर्माण प्रक्रिया
कार्यालयी हिन्दी की उपयोगिता एवं उसका महत्व

इकाई : 4

पारिभाषिक शब्दावली सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परिचय
पारिभाषिक शब्दावली अभिप्राय और वर्गीकरण
पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत
पारिभाषिक शब्दावली अनुवाद की समस्याएं
प्रशासन और विधि संबंधी शब्दावली
वाणिज्य संबंधी शब्दावली (बैंक, बीमा)

इकाई : 5

अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार
अनुवाद : अवधारणा और प्रक्रिया
हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
कार्यालयी हिन्दी एवं अनुवाद
विज्ञापन में अनुवाद
वाणिज्य में अनुवाद

सहायक ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी : भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी : लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, प्रमिला अवस्थी, आशीष प्रकाशन, कानपुर।
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी : डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, अलका प्रकाशन, कानपुर।
4. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार : डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन,नई दिल्ली।
5. मीडिया लेखन और सम्पादन कला : डॉ. गोविन्द प्रसाद, अनुपम पाण्डेय, डिस्कवरी पब्लिशिंग हॉउस, नई दिल्ली।
6. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी : डॉ. चन्द्रकुमार, बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes:

- सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली शब्दावलियां परंपरागत हिन्दी के व्यवहार में नहीं रही हैं ।
- इसके अलावा आज हिन्दी अनिवार्य रूप से बाजार तथा संचार माध्यमों की भाषा बनती जा रही है।
- इन सारी चुनौतियों को देखते हुए नये विभिन्न भाषाओं के प्रचलित शब्दभंडार को हिन्दी भाषा के व्यवहार में अपनाते हुए उनका मानकीकरण इस पाठ्यक्रम की विशेषता है।
- यह प्रश्नपत्र कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग से छात्रों को न सिर्फ परिचित कराता है, बल्कि उनके भीतर कार्यालयी हिन्दी के रचनात्मक स्वरुप को विकसित करने की संभावना के लिए भी उपयोगी है ।
- भाषा के बनने में व्याकरण के उपसर्ग, प्रत्यय एवं अन्य अवयवों का ज्ञान, नवीन परिवर्तनों के शब्दों को गढ़ने और भाषा को प्रभावशाली रूप में ढालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	3	3	2	3	2	3	1

CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	1	1	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – IV

प्रश्न पत्र – द्वितीय (वैकल्पिक)

लोक-साहित्य

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPDTD2	**लोक-साहित्य**	4	1	-	5 Hours	30	70	100	5

Course Objective :

- समष्टि की सृजनशीलता
- मिथक और यथार्थ
- शोक और उल्लास की अभिव्यक्ति

Syllabus Content :

इकाई : 1

लोक : प्राचीन और आधुनिक अवधारणा

लोकवृत्त : परिभाषा और क्षेत्र

लोकवार्ता एवं लोकवार्ता के सहयोगी शास्त्र : नृविज्ञान, मिथक, पुरातत्त्व और इतिहास, समाजशास्त्र,मनोविज्ञान ।

लोक साहित्य: परिभाषा, विशेषताएं

इकाई : 2

लोक साहित्य का वर्गीकरण

(क) प्रमुख रुप लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोक नाटक

(ख) गौण रुप लोकोक्तियाँ, मुहावरें, पहेलियाँ

लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य में अन्तर और अन्तर्सम्बन्ध

लोक साहित्य और लोक मानस, मिथक और लोक साहित्य

लोक साहित्य और लोक संस्कृति का अंतर्संबंध

इकाई : 3

लोकगीत: परिभाषा और लक्षण

लोकगीतों के विविध रुपों का परिचय

निर्धारित पाठ: लोकगीत

अवधी कजरी, टोना, सुहाग, भाँवर। भोजपुरी सोहर, अलचारी, विवाह गीत, चैता, ऋतुगीत, श्रम गीत, जतसार, रोपनी, सोहनी।

निर्धारित पाठ: कवितायें : व्याख्या एवं आलोचना

अवधी

क. बिटउनी : बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस'

ख. धरती हमार : चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका'

भोजपुरी

क. नाव मंत्री के, अब रहींला हम बेढब बनारसी'

ख. कवने खोतवा में लुकइलू : भोलानाथ 'गहमरी'

ग. मृग-तृष्णा : मोती बी.ए.

छत्तीसगढ़ी

क. अमरइया में : भगवती सेन

ख. ढरका दिन बादर के दुहना : रमेश अहीर

ग. मोर संग चलौ रे : लक्ष्मण मस्तुरिया

घ. अरपा पैरी के धार : नरेंद्र देव वर्मा

इकाई : 4

लोक गाथा : परिभाषा और लक्षण

प्रमुख लोकगाथाओं का परिचय लोरिकायन, चन्दायन, आल्हा

लोक कथा: परिभाषा और लक्षण

लोक कथाओं का वर्गीकरण, कथाभिप्राय, कथानक रूप, मिथक, परीकथाएँ, पशुपक्षी कथाएं

निर्धारित पाठ : कहानी

अवधी : क. भैरो के माई : विद्या बिन्दु सिंह

भोजपुरी : क. डुगडुगी – रामदेव शुक्ल

ख. मुट्टन काका के एक्का के सवारी - रामेश्वरनाथ तिवारी

इकाई : 5

लोक नाटक : परिभाषा और लक्षण

लोकनाटकों के विविध रुप

(क) श्रव्य : लोकगाथा, लोक आख्यान, पंडवानी, आल्हा, चंदैनी

(ख) दृश्य : रामलीला, रासलीला, नौटंकी, लावनी, प्रहसन, बिदेसिया, नाचा, खयाल, बारहमासा।

हिन्दी की जनपदीय बोलियों के प्रमुख लोकनाटकों का संक्षिप्त परिचय

निर्धारित पाठ: लोक नाटक : व्याख्या एवं आलोचना

बिदेसिया - भिखारी ठाकुर

चरनदास चोर : हबीब तनवीर

नोट : आधारभूत संरचना उपलब्ध होने की स्थिति में प्रस्तुत पाठ्यक्रम सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक (प्रदर्शन) दोनों माध्यम से अध्ययन कराया जायेगा।

सहायक ग्रंथ :

1. लोकसाहित्य की भूमिका : धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
2. लोक साहित्य के प्रतिमान : डॉ. कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, लखनऊ
3. लोक साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा : मनोहर शर्मा, वोहरा प्रकाशन, चैनसुख मार्ग, जयपुर
4. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र,शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, आगरा
5. भारतीय लोक साहित्य : श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

Course Learning Outcomes :

- लोक जीवन की मौखिक परंपरा में समष्टि की सृजनशीलता के परिणामस्वरुप लोक साहित्य का समृद्ध स्रोत है।

- किसी भी अंचल के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के अध्ययन में ये प्रामाणिक स्रोत तो होते ही हैं, इनमें आधुनिक कला रूपों को विकसित और समृद्ध करने की बड़ी संभावना है।
- हमारा लोक साहित्य मूलतः समष्टि की सृजनशीलता के परिणाम हैं। इसके मद्देनजर हमें परम्परागत हिन्दी का बाजार निर्मित करने की ओर ध्यान देना है।
- लोक कथाएँ और लोक गीत नयी तकनीक के माध्यम से दृश्य चित्रों और मार्मिक गीतों के सचित्र प्रसार में व्यापक संभावनाएं समेटे हुए हैं।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	3
CO 2	3	1	2	3	3	2	3	2	2	3	3	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	1	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – IV

प्रश्न पत्र – तृतीय

शोध प्रविधि

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPDTT2	**शोध-प्रविधि**	2	-	-	2 Hours	30	70	100	2

Course Objective :

- समाजशास्त्रीय मूल्याँकन
- साहित्य और इतिहास
- पाठालोचन

Syllabus Content :

इकाई : 1

शोध : अर्थ, परिभाषा और स्वरुप

शोध की व्युत्पत्ति, आलोचना, अनुसंधान अन्वेषण एवं शोध का अंतर।

शोध का प्रयोजन, शोध के मूल तत्व, शोध और सृजनात्मकता।

इकाई : 2

शोध के प्रकार : साहित्यिक शोध, पाठ संबंधित शोध, वैज्ञानिक शोध, तुलनात्मक शोध, ऐतिहासिक शोध।

शोध की प्रक्रिया - विषय चयन, विषय की रुपरेखा, सामग्री संकलन, तथ्य संकलन, संदर्भ सूची।

इकाई : 3

सामग्री संकलन की प्रक्रिया: शोध का व्यावहारिक पक्ष, अध्ययन क्षेत्र की सीमा, शोध प्रस्ताव, प्राथमिक स्रोत, द्वितीयक स्रोत ।

संक्षिप्त परिचय - भाषानुसंधान एवं तुलनात्मक अनुसंधान।

इकाई : 4

पाठानुसंधान : आशय, स्वरुप और सीमा, पाठ निर्धारण एवं प्रक्रिया।

सामग्री संकलन के स्रोत-खोज, रिपोर्ट, कैटलॉग पुस्तकें, संस्थान, पाठनुसंधान और पाठालोचन में अंतर, पाठालोचन के मुख्य सिद्धांत

इकाई : 5

शोध एवं प्रकाशन संबंधी नैतिकता : साहित्यिक चोरी, विषय का सामयिक महत्त्व, शोध विषय की मौलिकता, सन्दर्भ एवं उद्धरणों का महत्त्व, प्रकाशन की मौलिकता, शोध-प्रविधि में मौलिकता का महत्त्व ।

युनिकोड, पीपीटी निर्माण, वर्ड फाइल बनाना ।

सहायक ग्रंथ :

1. शोध प्रविधि, डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शोध और सिद्धांत, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3.हिन्दी अनुसन्धान, डॉ. विजयपाल सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
4. पाठालोचन, डॉ. सियाराम तिवारी, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, इंद्रनाथ चौधुरी, नेशनल प्रकाशन, नई दिल्ली।

Course Learning Outcomes :

- किसी भी तरह के शोधपरक आलेख, लघु शोध प्रबंध हेतु शोध प्रविधियों और उनकी सैद्धांतिक प्रक्रियाओं से अवगत होने के लिए यह प्रश्नपत्र आवश्यक है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्री या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।
- साहित्य का चिंतन और समाज एक दूसरे के सापेक्ष दिखाई देते हैं । इस पक्ष को स्पष्ट किया जा सकेगा ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	2	3	2	1	3	2	3	2	3	1
CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	1	2	3	3	2	3	2	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly

हिन्दी विभाग

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

स्नातकोत्तर हिन्दी

सेमेस्टर – IV

प्रश्न पत्र – चतुर्थ

लघु शोध-प्रबंध

Course Code	Course Name	Periods			Duration	Scheme			Credits
		L	T	P		IA	ESE	Sub Total	
HIPDLD1	**लघु शोध-प्रबंध**	5	1	-	6 Hours	30	70	100	6

Course Objective :

- साहित्य और आलोचना दृष्टि
- समाजशास्त्रीय अध्ययन
- सृजनात्मक क्षमता का विकास

Syllabus Content :

- साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

अथवा

- साहित्य की व्यावसायिक संभावनाओं के सन्दर्भ में से किसी एक विषय का चयन

- विषय का चयन छात्र तथा संबद्ध अध्यापक के विचार-विमर्श से तैयार करके विभागीय समिति द्वारा अनुमोदित किया जाएगा। विभागीय समिति में विभाग के समस्त अध्यापक उपस्थित रहेंगे जिसकी अध्यक्षता पदेन विभागाध्यक्ष करेगा।

Course Learning Outcomes :

- यह प्रश्नपत्र छात्र द्वारा समस्त अर्जित ज्ञान सम्पदा की प्रामाणिक प्रस्तुति के साथ ही अगर वह कभी भविष्य में कोई शोध करना चाहता है, तो यह उसकी पूर्व पीठिका भी है।
- प्रस्तुत प्रश्न-पत्र भारतीय ग्रामीण संरचना, उसकी सामुदायिकता, व्यक्तिवाद का उदय, स्वातंत्रयोत्तर भारत के समाज की विभिन्न हलचलों, आकांक्षाओं को समझने की दृष्टि से किसी समाजशास्त्रीय या इतिहासकार की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है।
- समाज को साहित्य की दृष्टि से देखने की समझ बढ़ेगी ।

Course Outcome and their mapping with programme outcomes:

CO	PO						PSO					
	PO1	PO2	PO3	PO4	PO5	PO6	PSO1	PSO2	PSO3	PSO4	PSO5	PSO6
CO 1	3	2	3	3	2	3	3	2	1	2	3	1

CO 2	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 3	3	3	2	3	3	2	3	2	2	3	1	2
CO 4	3	2	3	2	3	3	2	3	3	3	3	3

Weightage: 1- Sightly, 2- Moderatly, 3- Strongly